अनुबोधन, खण्ड 1, अंक 1, मार्च 2025, पृष्ठ 40–50
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट) 3108-1185 (ऑनलाइन)
प्रकाशित: 31 मार्च 2025
जर्नल वेबसाइट: https://anubodhan.org

भारतीय राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता

डॉ० मनोज कुमार द्विवेदी*

सारांश

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता (अब कोलकाता) का इतिहास भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसकी स्थापना 1836 में श्री जे. एच. स्टाकलर के प्रयासों से हुई थी। प्रारंभ में यह पुस्तकालय एक निजी मकान में था, और धीरे–धीरे इसका विस्तार हुआ और यह फोर्ट विलियम कॉलेज जैसे संस्थानों से ग्रंथों की प्राप्ति के बाद विभिन्न स्थानों पर स्थानांतरित होता रहा। फोर्ट विलियम कॉलेज, जो उस समय ब्रिटिश शासन के तहत एक प्रमुख शैक्षिक संस्थान था, से इस पुस्तकालय को कई महत्वपूर्ण ग्रंथ और दस्तावेज़ प्राप्त हुए। पुस्तकालय का संग्रह न केवल भारतीय साहित्य बल्कि पश्चिमी ज्ञान, इतिहास और विज्ञान से भी संबंधित था। इसके संग्रह को और समृद्ध बनाने के लिए समय–समय पर उदार व्यक्तियों और संस्थाओं ने अपनी निजी पुस्तकें और दस्तावेज़ दान किए, जो भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, कला, और साहित्य से संबंधित थे। समय के साथ, राष्ट्रीय पुस्तकालय का ख्याति और महत्व बढ़ा, और यह एक प्रमुख सांस्कृतिक संस्थान के रूप में स्थापित हो गया। इसकी प्रतिष्ठा ने इसे शोधकर्ताओं, विद्वानों, और आम नागरिकों के बीच एक महत्वपूर्ण स्थल बना दिया। यह न केवल भारतीय साहित्य और संस्कृति का संरक्षण करता है, बल्कि ज्ञान के प्रसार का एक प्रमुख केंद्र भी बन गया है।

बीज शब्दः *राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता, प्रकाशन, इतिहास*

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता (पूर्व में कलकत्ता) के उद्देश्य, इसके इतिहास, और इसके महत्व को विस्तार से समझने के बाद, इसे विभिन्न संदर्भों में वर्ष और वृद्धता (वृद्धि) के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुई थी, और इसे इंपीरियल लाइब्रेरी के रूप में 1903 में औपचारिक रूप से पुनर्गठित किया गया था। स्वतंत्रता के बाद, 1948 में इसे इंपीरियल लाइब्रेरी (नाम परिवर्तन) अधिनियम के तहत राष्ट्रीय पुस्तकालय के रूप में पुनर्गठित किया गया। 1 फरवरी 1953

*सहायक ग्रंथालयी, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

को भारत के केंद्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने इसका उद्घाटन किया।

प्रारंभ में, पुस्तकालय का संग्रह सीमित था, लेकिन समय के साथ इसका संग्रह निरंतर बढ़ता गया। 1907 में लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस से 2,333 खंड प्राप्त हुए, जो इसके संग्रह विस्तार का पहला महत्वपूर्ण कदम था। 1947 में, राष्ट्रीय पुस्तकालय के पास लगभग 3,50,000 संस्करण थे। वर्तमान में, यह पुस्तकालय भारत का सबसे बड़ा पुस्तकालय है और इसमें लाखों किताबें, दस्तावेज़, शोध पत्रिकाएँ, और अन्य मुद्रित सामग्री संग्रहित हैं। यह पुस्तकालय भारत और विदेशों से प्रकाशित सभी प्रकार के साहित्य का संग्रह करता है और आज यह भारत के सांस्कृतिक और शैक्षिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा बन चुका है।

संग्रह का विस्तार

राष्ट्रीय पुस्तकालय ने समय के साथ अपने संग्रह का विस्तार किया है, जिसमें भारतीय साहित्य के साथ–साथ विदेशी देशों से प्राप्त साहित्य भी शामिल है। इस पुस्तकालय ने न केवल ज्ञान के संरक्षण का कार्य किया है, बल्कि यह एक शैक्षिक और सांस्कृतिक स्रोत के रूप में कार्य करता है, जो भारतीय और वैश्विक समुदाय के लिए उपयोगी है। डिजिटल संग्रहण की दिशा में भी यह पुस्तकालय सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। इसका उद्देश्य है कि पुस्तकालय की सामग्री को डिजिटल रूप में भी संरक्षित किया जाए, ताकि आने वाली पीढ़ियों को आसानी से ये संसाधन उपलब्ध हो सकें। राष्ट्रीय पुस्तकालय की उत्पत्ति और विकास की कहानी एक लंबी और समृद्ध यात्रा रही है, जिसने इसे भारत और दुनिया भर में ज्ञान के एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित किया है।

ज्ञान का संग्रहण और संरक्षण

राष्ट्रीय पुस्तकालय का प्रमुख उद्देश्य भारतीय और वैश्विक साहित्य, विज्ञान, इतिहास, और संस्कृति का संग्रहण करना है। इसका संग्रह विश्व भर से प्रकाशित होने वाली महत्वपूर्ण पुस्तकों, शोध पत्रों, और दस्तावेजों से समृद्ध है। इसके तहत विभिन्न भारतीय भाषाओं (जैसे हिंदी, बांग्ला, तमिल, गुजराती, उर्दू) में प्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रंथों का संकलन किया जाता है।

पुस्तकालय में भारतीय साहित्य के साथ–साथ पश्चिमी साहित्य, वैज्ञानिक शोध, इतिहास, और संस्कृति से संबंधित दस्तावेज़ भी संग्रहीत किए जाते हैं।

प्रकाशनों का संग्रह और वितरण

डिलीवरी ऑव बुक्स ऐक्ट 1954 के तहत, भारत में प्रकाशित होने वाली प्रत्येक पुस्तक की एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय को भेजी जाती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि पुस्तकालय में हर नवीनतम प्रकाशित सामग्री का रिकॉर्ड और संग्रह रखा जाए।

इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय ने राष्ट्रीय ग्रंथसूचियों का प्रकाशन किया है, जो शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए एक उपयोगी संसाधन बनती है।

सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण

राष्ट्रीय पुस्तकालय भारत की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहां पर दुर्लभ पांडुलिपियाँ, ऐतिहासिक दस्तावेज़, पुराने ग्रंथों और पत्रिकाओं का संग्रह होता है, जो भारतीय इतिहास और संस्कृति की गहरी समझ प्रदान करते हैं।

यह पुस्तकालय भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, कला, और इतिहास से संबंधित दुर्लभ दस्तावेजों को सुरक्षित रखने में अहम भूमिका निभाता है।

शोध और शिक्षा का समर्थन

राष्ट्रीय पुस्तकालय शोधकर्ताओं, छात्रों, और विद्वानों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। इसके विशाल संग्रह का उपयोग शैक्षिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है, और यह एक संदर्भ केंद्र के रूप में कार्य करता है, जहां शोधार्थी और विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में अपनी रिसर्च कर सकते हैं।

पुस्तकालय के दस्तावेज़ों का उपयोग इतिहास, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, राजनीति, और संस्कृति जैसे विभिन्न शोध क्षेत्रों में किया जाता है।

ज्ञान का प्रसार

राष्ट्रीय पुस्तकालय न केवल एक संग्रहालय है, बल्कि यह ज्ञान के प्रसार का भी एक प्रमुख माध्यम है। यहां समय–समय पर सेमिनार, कार्यशालाएँ, और

प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती हैं, जो साहित्य, विज्ञान, कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

इसके माध्यम से सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन कर भारतीय साहित्य और संस्कृति का प्रचार किया जाता है।

सूचना का केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तकालय का उद्देश्य अपने संग्रह का उपयोग करने वाले व्यक्तियों के लिए सूचना का प्रमुख केंद्र बनना भी है। इसके माध्यम से पाठक और शोधकर्ता न केवल प्रिंट सामग्री बल्कि डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का भी उपयोग कर सकते हैं।

पुस्तकालय द्वारा संचालित डिजिटल सेवाएँ शोधकर्ताओं और छात्रों को विश्वभर के संसाधनों तक पहुँच प्रदान करती हैं, जिससे ज्ञान का आदान–प्रदान और प्रसार होता है।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सहयोग

राष्ट्रीय पुस्तकालय का कार्य न केवल भारत के भीतर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय ज्ञान और सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देने का है। पुस्तकालय ने विभिन्न ग्रंथसूचियाँ प्रकाशित की हैं, और राज्य सरकारों द्वारा विशेष भाषाओं जैसे तमिल, मलयालम, और गुजराती की ग्रंथसूचियाँ भी प्रकाशित की गई हैं, जो भारतीय भाषाओं के साहित्य को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से किए गए प्रयास हैं।

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता का कार्य केवल एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में नहीं है, बल्कि यह ज्ञान का संवर्धन, प्रसार, और सुरक्षा का प्रमुख केंद्र बनकर भारतीय और विश्व के बौद्धिक समुदाय के लिए एक अनमोल धरोहर साबित हुआ है। इसके विशाल संग्रह में भारतीय साहित्य, संस्कृति, इतिहास, और विज्ञान के महत्वपूर्ण दस्तावेजों का संरक्षण किया जाता है, और यह शोधकर्ताओं, छात्रों, और नागरिकों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन बन चुका है। राष्ट्रीय पुस्तकालय आज न केवल भारत बल्कि वैश्विक स्तर पर भी ज्ञान के प्रसार का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है।

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता के इतिहास में कई प्रमुख व्यक्तियों का योगदान रहा है जिन्होंने इस संस्थान के विकास, विस्तार और समृद्धि में अहम भूमिका निभाई। ये व्यक्तित्व न केवल पुस्तकालय के संग्रह और संचालन में शामिल रहे, बल्कि उन्होंने भारतीय साहित्य, शिक्षा और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण कार्य किया।

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता की स्थापना के बाद, इसे कई उदार व्यक्तियों और संगठनों से लगातार समर्थन प्राप्त हुआ, जिससे इसके संग्रह में वृद्धि हुई और इसका महत्व बढ़ा। इन समर्थनकर्ताओं ने पुस्तकालय को न केवल किताबें और ग्रंथ दान किए, बल्कि इसे साहित्य, इतिहास और संस्कृति के संरक्षण का एक प्रमुख केंद्र बनाने में मदद की।

श्री जे. एच. स्टाकलर

श्री जे. एच. स्टाकलर का नाम राष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापना से जुड़ा हुआ है। उन्होंने 1836 में पुस्तकालय की नींव रखी थी। उनका उद्देश्य भारतीय और पश्चिमी साहित्य, कला और विज्ञान का संकलन करना था। श्री स्टाकलर के प्रयासों ने पुस्तकालय को स्थापित करने में मदद की, जो बाद में भारत का सबसे बड़ा पुस्तकालय बन गया। उनकी योजना ने भारतीय ज्ञान और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की दिशा में एक ठोस कदम बढ़ाया।

श्री नागेंद्रनाथ बोस

श्री नागेंद्रनाथ बोस ने पुस्तकालय के संग्रह को समृद्ध करने के लिए कई महत्वपूर्ण ग्रंथ और पांडुलिपियाँ दान दीं। उन्होंने भारतीय साहित्य और संस्कृति के संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लिया। बोस का योगदान विशेष रूप से बंगाल और भारतीय साहित्य के संदर्भ में रहा है, और उनके द्वारा दान की गई सामग्री ने पुस्तकालय को एक अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर दिया।

विजयनाथ घोष

विजयनाथ घोष ने संग्रह और प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और पुस्तकालय के विकास में सक्रिय रूप से शामिल रहे। उनकी पहल ने पुस्तकालय की कार्यप्रणाली और संरचना को बेहतर बनाया, और इसके विकास के लिए विभिन्न योजनाएँ लागू कीं।

रिचे समिति

1926 में रिचे समिति नामक संस्था ने राष्ट्रीय पुस्तकालय के विकास के लिए भारत सरकार को एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। इसमें पुस्तकालय के ढांचे, संग्रहण नीति और प्रशासनिक सुधारों के बारे में सुझाव दिए गए थे। इस रिपोर्ट ने पुस्तकालय के प्रशासन में सुधार लाने में मदद की और इसके लिए दीर्घकालिक विकास की दिशा निर्धारित की।

डॉ. सत्येन्द्रनाथ ठाकुर

डॉ. सत्येन्द्रनाथ ठाकुर, जो एक प्रसिद्ध पुस्तकालय विशेषज्ञ थे, ने पुस्तकालय के संग्रहण और संचालन की प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उनके योगदान ने पुस्तकालय की कार्यप्रणाली को सुव्यवस्थित किया और इसे एक आधुनिक संदर्भ पुस्तकालय बनाने में मदद की।

श्री के. पी. श्रीनिवासन

के. पी. श्रीनिवासन ने पुस्तकालय की संस्कृत और अन्य प्राचीन पांडुलिपियों के संग्रहण की प्रक्रिया को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी पहल ने पुस्तकालय को भारतीय संस्कृति और ज्ञान के पुराने खजानों को संरक्षित करने के प्रयासों में मदद की, खासकर प्राचीन साहित्य और पांडुलिपियों के संदर्भ में।

आधुनिक स्थिति

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता आज एक अत्याधुनिक, व्यापक और समृद्ध पुस्तकालय है, जिसमें लगभग 12 लाख से अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इसमें भारतीय और विदेशी भाषाओं में पुस्तकें, पत्रिकाएँ, दस्तावेज़, शोधपत्र, और दुर्लभ पांडुलिपियाँ शामिल हैं। यह पुस्तकालय एक सांस्कृतिक धरोहर और शोध का प्रमुख केंद्र बन चुका है, जहां साहित्य, विज्ञान, इतिहास, कला, समाजशास्त्र, और अन्य क्षेत्रों के महत्वपूर्ण ग्रंथों का संग्रह है।

वर्तमान संग्रह

लगभग 12 लाख (1.2 मिलियन) किताबें और दस्तावेज़ तथा 120 से अधिक भाषाओं में ग्रंथ हैं, जिनमें प्रमुख रूप से हिंदी, बंगाली, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, तमिल, गुजराती और अन्य भारतीय भाषाएँ शामिल हैं। इस ऐतिहासिक

ग्रंथालय को समृद्ध करती हैंद्य 243 न्यूज पेपर, 100 सबसक्रिबेड रिसोर्स, 10000 अनलाइन जर्नल, 634 विदेशी पत्रिकाएं, ई बुक्स आदि इसमे समाहित हैं।

डिजिटल संसाधन पुस्तकालय ने अपनी सामग्री का एक बड़ा हिस्सा डिजिटल रूप में संग्रहित किया है, ताकि अधिक से अधिक लोगों तक इसकी पहुँच हो सके।

दुर्लभ पांडुलिपियाँ और ग्रंथः इसमें प्राचीन भारतीय पांडुलिपियाँ, ऐतिहासिक दस्तावेज़, और दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह भी शामिल है, जो इसे एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित करता है।

डिलीवरी ऑफ बुक्स एक्ट 1954 के तहत, भारत में प्रकाशित होने वाली प्रत्येक पुस्तक की एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय को भेजी जाती है, जिससे यह पुस्तकालय नवीनतम साहित्य का केंद्र भी बना हुआ है।

भवन और संसाधन

राष्ट्रीय पुस्तकालय का वर्तमान भवन कोलकाता के बेल्वेडियर एस्टेट में स्थित है। यह एक ऐतिहासिक और भव्य भवन है, जो साल 1948 में स्थापित किया गया था।

प्रमुख पुस्तकालय हॉल जहां किताबें पढ़ने के लिए विद्वान और विद्यार्थी आते हैं। विशेष संग्रह कक्ष जहां दुर्लभ पांडुलिपियाँ, ऐतिहासिक दस्तावेज़ और दुर्लभ किताबें संरक्षित हैं। कंप्यूटर और इंटरनेट सुविधाएँ जो पुस्तकालय के डिजिटल संसाधनों तक पहुँच प्रदान करती हैं। ऑडिटोरियम और सेमिनार हॉल जहां शैक्षिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

कार्य

राष्ट्रीय पुस्तकालय का कार्य केवल पुस्तकें प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक शैक्षिक, सांस्कृतिक और अनुसंधान केंद्र के रूप में भी कार्य करता है। ज्ञान का संग्रहण और संरक्षण, शोध और शिक्षा का समर्थन, दुर्लभ ग्रंथों और पांडुलिपियों का संरक्षण, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और कार्यक्रम इसके प्रमुख कार्य हैं इसके अलावा

भारतीय ज्ञान परंपरा में राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता का योगदान

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता (अब कोलकाता) भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अनमोल धरोहर है। इसकी स्थापना 1836 में श्री जे. एच. स्टाकलर के प्रयासों से हुई थी, और इसके माध्यम से यह पुस्तकालय भारतीय साहित्य, संस्कृति, और ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देता आया है।

भारतीय साहित्य का संग्रहण

पुस्तकालय ने भारतीय साहित्य की विविधता को संरक्षित किया है। संस्कृत, हिंदी, बांग्ला, उर्दू और अन्य भारतीय भाषाओं में ग्रंथों और पांडुलिपियों का विशाल संग्रह इसमें शामिल है।

भारतीय धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथ जैसे वेद, उपनिषद, पुराण, महाभारत, रामायण, भगवद गीता, और अन्य धार्मिक साहित्य को सुरक्षित किया गया है। इसके अतिरिक्त, भारतीय कला, संगीत, नृत्य, और संस्कृति से संबंधित साहित्य का भी संग्रह किया गया।

दुर्लभ पांडुलिपियों और ऐतिहासिक दस्तावेजों का संरक्षण

राष्ट्रीय पुस्तकालय में दुर्लभ पांडुलिपियाँ और ऐतिहासिक दस्तावेजों का संग्रह है, जो भारतीय ज्ञान और संस्कृति का अमूल्य हिस्सा हैं। इन पांडुलिपियों में प्राचीन भारतीय विज्ञान, गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र, और कला से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी शामिल है।

इन दस्तावेज़ों के माध्यम से भारतीय समाज के प्राचीन ज्ञान, अनुसंधान, और तात्त्विक दृष्टिकोण को संरक्षित किया गया है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

पश्चिमी और भारतीय ज्ञान का संगम

प्रारंभ में फोर्ट विलियम कॉलेज से ग्रंथों की प्राप्ति के बाद, पुस्तकालय ने भारतीय और पश्चिमी साहित्य का संगम किया। इस संग्रह ने भारतीय और यूरोपीय ज्ञान के आदान–प्रदान का मार्ग खोला, जिससे भारतीय शिक्षा और साहित्य में नवचेतना आई।

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान पुस्तकालय ने भारतीय और पश्चिमी ज्ञान के बीच सेतु का काम किया। इसके माध्यम से भारतीय विद्वानों को पश्चिमी साहित्य और विज्ञान के महत्वपूर्ण ग्रंथों की जानकारी प्राप्त हुई,

जबकि यूरोपीय विद्वानों को भारतीय ज्ञान परंपरा और साहित्य से अवगत कराया गया।

भारतीय संस्कृति का संरक्षण और प्रसार

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता ने भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण पहलुओं का संग्रहण किया और इनका संरक्षण करके उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाया। इसका उद्देश्य न केवल ज्ञान का संग्रहण करना था, बल्कि उसे प्रसारित भी करना था, ताकि भारतीय और विदेशी विद्वान, शोधकर्ता, और सामान्य लोग इसका लाभ उठा सकें।

इसके संग्रह में भारतीय कला, संगीत, नृत्य और सांस्कृतिक इतिहास से संबंधित सामग्री भी शामिल है, जो भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखने में मदद करती है।

शोध और शिक्षा में योगदान

राष्ट्रीय पुस्तकालय ने भारतीय और अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं को एक महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान किया है। इसके संग्रह में उपलब्ध शोध पत्र, संस्मृतियाँ, और प्राचीन ग्रंथ शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत मूल्यवान हैं। यह पुस्तकालय भारत के शैक्षिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य करता है, जिससे ज्ञान का प्रसार होता है और भारतीय शोध को प्रोत्साहन मिलता है।

इसके अलावा, राष्ट्रीय पुस्तकालय ने भारतीय और विदेशी शैक्षिक संस्थाओं के साथ सहयोग कर कई महत्वपूर्ण शोध परियोजनाओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया है, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रचार–प्रसार हुआ है।

डिजिटलीकरण और वैश्विक ज्ञान का प्रसार

डिजिटल संग्रह और ऑनलाइन सेवाएँ पुस्तकालय ने अपनी डिजिटल सेवाओं को भी मजबूत किया है। ऑनलाइन कैटलॉग, ई–पुस्तकें, और डिजिटल डेटाबेस जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जिससे लोग घर बैठे अपनी आवश्यक पुस्तकें और शोध सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तकालय ने विभिन्न ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और ई–लर्निंग का भी संचालन किया है, जो विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए लाभकारी हैं। आधुनिक समय में, राष्ट्रीय पुस्तकालय ने अपनी ऐतिहासिक सामग्री को डिजिटलीकरण के माध्यम से सुलभ किया है,

जिससे अब ये ग्रंथ और दस्तावेज़ दुनिया भर में ऑनलाइन उपलब्ध हैं। इसके माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया गया है। अब भारतीय साहित्य, संस्कृति और इतिहास का अध्ययन न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी किया जा सकता है।

ग्रंथसूचियाँ और पुस्तक प्रकाशन

राष्ट्रीय पुस्तकालय राष्ट्रीय ग्रंथसूचियाँ और राज्य–स्तरीय ग्रंथसूचियाँ प्रकाशित करता है, जो भारत की प्रमुख भाषाओं में उपलब्ध साहित्य का रिकॉर्ड प्रस्तुत करती हैं। पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित ग्रंथसूची और अन्य संदर्भ पुस्तकें शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए अत्यधिक सहायक होती हैं।

अंत मे हम या कह सकते हैं कि राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता ने भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके संग्रह में न केवल भारतीय साहित्य और संस्कृति के अमूल्य धरोहरों का संग्रह किया गया है, बल्कि इसने भारतीय और पश्चिमी ज्ञान के बीच संवाद और आदान–प्रदान को भी बढ़ावा दिया है। यह पुस्तकालय आज भारतीय और वैश्विक ज्ञान का केंद्र बन चुका है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर के रूप में कार्य करता रहेगा। राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता (अब कोलकाता) आज भारतीय और वैश्विक साहित्य, संस्कृति और ज्ञान का एक प्रमुख केंद्र बन चुका है। यह पुस्तकालय न केवल ज्ञान के संरक्षण का कार्य करता है, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के साथ–साथ शैक्षिक और शोध गतिविधियों का भी एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। इसके संग्रह में दुर्लभ पांडुलिपियाँ, ऐतिहासिक ग्रंथ, और शैक्षिक सामग्री शामिल हैं, जो इसे एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्थान बनाते हैं। पुस्तकालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम, शैक्षिक गतिविधियाँ, और डिजिटल सेवाएँ इसे न केवल एक ज्ञान केंद्र, बल्कि शैक्षिक और सांस्कृतिक संस्थान के रूप में भी स्थापित करती हैं। इसके संग्रह और कार्यप्रणाली में सुधार के लिए कई प्रमुख व्यक्तियों का योगदान रहा है, जिन्होंने इसे एक विशाल और समृद्ध संस्था के रूप में उभारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन व्यक्तित्वों ने राष्ट्रीय पुस्तकालय को एक संस्कृतिक धरोहर के संरक्षक और ज्ञान के प्रसारक के रूप में स्थापित किया है।

आज, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता भारत का सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक पुस्तकालय है, जो न केवल भारतीय साहित्य और संस्कृति का संरक्षण करता है, बल्कि उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रसारित भी करता है। इसका संग्रह और कार्यक्षेत्र समय के साथ बढ़ता गया है, और यह आज एक शैक्षिक, सांस्कृतिक और शोध संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है, जो न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भः

1. "National Library of India-" National Library of India, Government of India, https:www.nationallibrary.gov.in, Accessed 10 Dec- 2024

2- "Official Website of Ministry of Information and Broadcasting-" Government of India, https:www.india.gov.in official website of ministry of information and broadcasting, Accessed 10 Dec- 2024

3. वर्मा, सुरेश चंद्र, पुस्तकालयों का इतिहास

4. इंपीरियल लाइब्रेरी और उसका ऐतिहासिक संदर्भ

5. "Reports and Studies on National Library Development-" Ministry of Education, Government of India

6. दास, सौम्या, कोलकाता में राष्ट्रीय पुस्तकालय कर्मचारियों की भारी कमी का सामना कर रहा है, द हिंदू, 16 जुलाई 2016

7. भारतीय राष्ट्रीय पुस्तकालय की पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण, सीडीएनएलएओ न्यूज़लैटर 47, 7 अप्रैल 2014

8. नेशनल लाइब्रेरी का इतिहास, इंपीरियल लाइब्रेरी से नेशनल लाइब्रेरी तक, भारत का राष्ट्रीय पुस्तकालय, 17 जून 2016

9. मरे, स्टुअर्ट, द लाइब्रेरी एन इलस्ट्रेटेड हिस्ट्री, शिकागो एएलए एडिशन, 2009

10. झिमली मुखर्जी पांडे, नेशनल लाइब्रेरी में गुप्त कक्ष, टाइम्स ऑफ इंडिया, 22 नवंबर 2010

11. कोलकाता की भुतहा लाइब्रेरी, जब रात होती है, तो अंदर के कक्षों में खड़ा होना भी डरावना लगता है! बहुत अच्छी तरह से राज्यपाल की पत्नी रोती हैं, द बंगाली क्रॉनिकल (बंगाली में), 17 जून 2022.

Copyright © 2025 Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License (CC BY-NC-ND 4.0).